Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, OCT-NOV, 2021, VOL-9/48

महात्मा गांधी के चिंतन में मानववादी तत्व

पुनीत शुक्ल[1] & इफ्तिखार अहमद अंसारी[2], Ph. D.

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), एन० आर० ई० सी० कॉलेज खुर्जा, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

ईमेलः puneetshukla1987@gmail.com

[2]एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), एन० आर० ई० सी० कॉलेज खुर्जा, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

Paper Received On: 25 NOV 2021

Peer Reviewed On: 30 NOV 2021

Published On: 1 DEC 2021

Abstract

विश्व के सभी चिंतक विश्व को अपने दृष्टिकोण से देखते हैं। महात्मा गांधी विश्व को एक वृहद और मानववादी दृष्टिकोण से देखते हैं। गांधी के दर्शन की व्यापकता और स्वीकार्यता विश्वव्यापी है। गांधी को दुनिया के सभी देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है और आधुनिक विश्व की समस्याओं के समाधान में गांधी दर्शन की उपयोगिता पर विचार होता है। अनेक युद्धों की विभीषिका झेल चुकी दुनिया में आज गांधी दर्शन के मानववादी विचार बहुत प्रासंगिक हैं। गांधी द्वारा दिये गए विचार सत्य और अहिंसा का सिद्धांत, सत्याग्रह, सर्वोदय, न्यासिता का सिद्धांत मानवता के पथ प्रदर्शक के रूप में दुनिया के लिये उपयोगी हैं। इस बात को पूरा विश्व समझ रहा है। इस लेख में गांधी के इन्हीं मानववादी विचारों पर चर्चा की गई है।

मुख्य शब्दः *महात्मा गांधी, गांधीवाद, मानववाद, सर्वोदय, सत्य, अहिंसा*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

आज जहाँ एक ओर दुनिया में तकनीक और विज्ञान का विकास हो रहा है और दुनिया आर्थिक रूप से समृद्ध हो रही है, वहीं दूसरी तरफ़ दुनिया भर में बहुत से लोग बीमारियों, भ्रष्टाचार, भोजन की कमी, अवसाद और युद्धों से मर रहे हैं। हथियार बेचने वाले देश हथियार बेच रहे हैं और हथियार खरीदने वाले देश अपनी आय का अधिकांश हिस्सा शिक्षा और विकास में लगाने के स्थान पर इन हथियारों को खरीदने पर खर्च कर रहे हैं। इससे अनेक देशों में एक आम आदमी का जीवन संकट में पड़ता है। ऐसी स्थिति में दुनिया को संकट से बचाने के लिये गांधी का मानववादी चिंतन बहुत उपयोगी है।

गाँधी एक महात्मा, कर्मयोद्धा और मानववादी चिंतक के रूप में

महात्मा गांधी उन्नीसवीं सदी में जन्मे एक ऐसे विचारक और महापुरुष हैं जिन्होंने अपने विचारों के माध्यम से पूरी दुनिया का मार्गदर्शन किया है। उनके चिंतन में ईश्वर में आस्था, कर्तव्य के प्रति समर्पण, साध्य के साथ साधन की पवित्रता, सत्य के प्रति निष्ठा, अहिंसा और सर्वोदय की बात की गई

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

है। गाँधी एक व्यावहारिक आदर्शवादी चिंतक थे। वे न केवल विचार देते थे अपितु उन विचारों को अपने जीवन और कर्मक्षेत्र में उतारते भी थे। उन्होंने एक रक्तहीन क्रांति के माध्यम से भारत को विदेशी गुलामी से मुक्त करवाने में अपना अतुलनीय योगदान दिया। जे० एच० होम्स ने गांधी को विश्व का महानतम व्यक्ति बताया है।

वर्तमान परिस्थितियों में गाँधी के मानववादी विचारों की उपयोगिता

विश्व में वर्तमान परिस्थितियों में जिस नैतिक संकट ने हमें ग्रस्त कर लिया है, उसको हम गांधीवादी सिद्धांतों से दूर कर सकते हैं। इसलिए हमें गांधी दर्शन के उन विशेषताओं को समझना होगा। महात्मा गांधी बहुलवाद के पक्षधर थे। उनकी राजनीति ने किसी भी संकीर्ण रवैये का प्रदर्शन नहीं किया। वर्तमान पीढ़ी के लिए महात्मा गांधी की जो सबसे बड़ी देन है वह विरोध के साधन के रूप में उनके अहिंसा और सत्याग्रह सम्बन्धी विचार हैं। यह पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित करने वाले विचार थे। स्वतंत्रता, न्याय और अधिकारों के लिए लड़ने के साधन के रूप में अहिंसा और शांति का प्रस्ताव देना एक नवीन विचार थे। गांधी ने ये विचार ऐसे समय दिया जब यूरोप विश्व युद्धों के प्रभाव से लड़खड़ा रहा था। गांधी की अहिंसा ने असहयोग की एक अपरंपरागत पद्धति को प्रकट किया जो किसी अतिवादी पद्धति की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली थी। रोमां रोलां के अनुसार ''महात्मा गांधी महामानव थे जिन्होंने तीस करोड़ लोगों को विद्रोह करने के लिए आंदोलित किया, जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिला दिया और जिन्होने राजनीति में पिछले दो हजार वर्षों के सर्वाधिक शक्तिमान धार्मिक संवेग का समावेश किया□''

महात्मा गांधी का अहिंसा का सिद्धांत मानवतावाद के आधार पर खड़ा था। दक्षिण अफ्रीका और चंपारण से लेकर बाद तक के सभी आंदोलनों में उन्होंने अपने विचारों पर आधारित अहिंसा और सत्याग्रह की पद्धति को अपनाया। ऐसे समय में जब देश विभाजन की आग में जल रहा था, गांधी बंगाल के पूर्वी हिस्से में गए और उनके हस्तक्षेप के कारण हिंसा रुक गई। वर्तमान समय में पूरे विश्व में मूल्यों का संकट है, जो मानव कल्याण के विरुद्ध हैं। प्रेम , सद्भाव, अहिंसा के स्थान पर हिंसा, घृणा और स्वार्थ सिद्धि को वरीयता मिल रही है जिससे मानवता के समक्ष एक संकट पैदा हो गया है। बेहतर मनुष्य बनने और शारीरिक स्तर से ऊपर उठकर आध्यत्मिक स्तर तक पहुँचने के लिए जीवन का मानववादी दर्शन ही उपयोगी है। इससे मानव के अंतर में विचारों और उसके कर्मों को शुद्ध करके समाज में प्रेम और सद्भाव पैदा किया जा सकता है।

ईश्वर और आत्मा की एकता में विश्वास

गांधी एक सच्चे मानववादी थे। मानववाद का लक्ष्य एक आदर्श जीवन है। इसकी संकल्पना भगवद गीता में है जहाँ मनुष्य को अपने आप से एक आदर्श व्यक्तित्व बनाने की बात की गई है और सभी व्यक्तियों को इसमें शामिल किया गया है ताकि वे सामूहिक कल्याण में वृद्धि हो सके।। मानववाद का उद्देश्य विश्व का कल्याण और विश्व में नैतिक भावना के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करना है। गांधी ने मानववाद आधारित एक ऐसे नैतिक सामाजिक व्यवस्था की कल्पना किया है जहाँ

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

त्याग, सत्य, और अहिंसा हो और वैश्विक शांति सद्भावपूर्ण व्यवस्था का निर्माण हो। गांधी ब्रह्माण्ड में सब कुछ जुड़ा और अन्योन्याश्रित मानते थे। गांधी कहते हैं ''मैं ईश्वर की पूर्ण एकता में विश्वास करता हूँ और इसलिए मानवता की एक है। भले हमारे अलग–अलग शरीर हैं लेकिन हमारे पास एक ही आत्मा है। सूर्य की किरणें अपवर्तन द्वारा अनेक होती हैं लेकिन उनका एक ही स्रोत है।''

सर्वोदय का विचार

सर्वोदय सर्व और उदय शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है सबका उदय अर्थात सबका उत्थान या सबका कल्याण। महात्मा गांधी के सर्वोदय के विचार के अंतर्गत सभी के कल्याण की बात की गई है। किसी एक का कल्याण दूसरे के कल्याण से जुड़ा है। इसे सर्वोदय की दृष्टि से प्राप्त किया जा सकता है। सर्वोदय से आशय ऐसी व्यवस्था से है कि जहाँ हर आदमी को समान अवसर मिले। जहाँ शांति और अहिंसा आधार स्तम्भ हों। जहाँ शोषण, युद्ध और हिंसा न हो।

गांधी अपने ग्राम स्वराज के विचार के अंतर्गत सभी के कल्याण, आर्थिक समानता और सद्भाव पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था की बात करते हैं। ग्रामीण स्तर पर आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति के लिये कुटीर उद्योगों का अपना महत्व है। बेसिक शिक्षा पर गांधी के विचार आज भी उतने ही सही हैं क्योंकि उनका बल न केवल जन साक्षरता पर था बल्कि शिक्षा के माध्यम से सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् के बुनियादी सिद्धांतों पर था। ग्राम स्वराज और बेसिक शिक्षा पर गांधी के विचार सर्वोदय के उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक हैं।

विश्व में सभी मनुष्यों के बीच सभी प्रकर के भेदभावों को समाप्त करके समानता स्थापित करने में गांधी का सर्वोदय का विचार बहुत उपयोगी है। गांधी के अनुसार समानता लाने और समाज में सभी प्रकार के भेदभाव को मिटाने का सबसे अच्छा तरीका है। गांधी के अनुसार व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर निर्भर हैं और हर एक आदमी दूसरे से जुड़ा है इसलिए सभी का कल्याण आवश्यक है। यहाँ सर्वोदय का अर्थ है सभी का कल्याण और सभी का सर्वांगीण विकास, किसी एक व्यक्ति, वर्ग या समूह का कल्याण सर्वोदय नहीं है। यहीं गांधी का सर्वोदय समाजवाद, मार्क्सवाद और उपयोगितावाद जैसे पश्चिमों विचारों से व्यापकता लिए हुए है। यहाँ तक कि सर्वोदय केवल मनुष्यों की ही नहीं अपितु विश्व में उपस्थित अन्य सभी जीव–जंतुओं की भलाई की कामना करता है। गांधी का सर्वोदय का विचार भारत के इस प्राचीन विचार से प्रेरित है:

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत् ।''

न्यासिता का सिद्धांत

गांधी ने राजनीतिक और अन्य विषयों के साथ ही आर्थिक पहलू पर भी विचार किया है। आर्थिक असमानता सामाजिक समानता की स्थापना में एक बाधा है। इस बाधा को दूर करने के लिये गांधी ने न्यासिता का सिद्धांत दिया है जो काफी उपयोगी है। न्यासिता का सिद्धांत आर्थिक खाइयों को पाटने और

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सामाजिक सद्भाव और न्याय स्थापित करने का एक विचार है। यह सिद्धांत धन के निजी संचय के विरुद्ध है। पूंजीपति और अमीर वर्ग अपने धन या पूंजी के न्यासी के रूप में कार्य कर सकता है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी संपत्ति का मालिक नहीं बल्कि न्यासी है। यह विचार नैतिकता, अहिंसा और आर्थिक समानता को बढ़ाने वाला है जिससे एक अच्छी और सद्भावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होगा।

अहिंसा का सिद्धांत

अहिंसा का सिद्धांत गांधीवादी चिंतन का आधार स्तम्भ है। यह केवल विचार ही नहीं बल्कि गांधी द्वारा प्रयोग किया गया एक ऐसा साधन है जिसने भारत को ब्रितानी शासन से स्वतंत्रता दिलाई। गांधी ने हिंसा और रक्तपात के स्थान पर अहिंसा का प्रयोग करके दुनिया को एक ऐसा रास्ता दिखाया जिसमें बिना किसी हथियार के आने से कई गुना ज़्यादा शक्तिशाली और शस्त्रों से सम्पन्न शत्रु को पराजित किया जाता है। गांधी स्पष्ट रूप से यह कहते हैं कि अहिंसा का अर्थ हिंसा न करना नहीं है। अहिंसा का अर्थ व्यापक है। इसमें मन, वचन और कर्म से अहिंसक होना है और अपने अहिंसक आचरण से शत्रु का हृदय परिवर्तन करना है। गांधी का स्पष्ट रूप से कहना हैं कि अहिंसा कमजोरों का अस्त्र नहीं बल्कि सत्य की राह पर चलने वाले दृढ़ और साहसी लोगों का साधन है। आतंकवाद, नरसंहार, सशस्त्र युद्धों के इस दौर में दुनिया गांधी के अहिंसा के सिद्धांत को समझ रही है।

राजनीति में धर्म और नैतिकता का समावेश

गांधी मेकियावली की भांति राज्य और राजनीति को धर्म और नैतिकता से मुक्त नहीं करते। लेकिन, गांधी के धर्म का अर्थ भगवदगीता की भांति व्यापक है। धर्म का अर्थ कर्तव्य होता है और सच्चा धार्मिक व्यक्ति सत्य की राह पर चलने वाला मानवता का सेवक होता है जिसका लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति है। गांधी के अनुसार ईश्वर को उसकी रचनाओं से अलग नहीं किया जा सकता अर्थात मानवता की सेवा ही ईश्वर की भक्ति है। इस प्रकार गांधी राजनीति में धर्म और नैतिकता को शामिल करके उसे अधिक रचनात्मक और सेवाभाव से युक्त बनाते हैं। यह गांधी का विचार मौलिक है।

धर्म निरपेक्षता का विचार

गांधी सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते हैं और यही उनका धर्म निरपेक्षता का विचार है जो पश्चिम की धर्म निरपेक्षता की अवधारणा से मेल नहीं खाता। गांधी सभी धर्मों के प्रति समभाव और सम्मान का भाव रखने की बात करते हैं। उनका मानना है कि धर्म सभी को अलग करने के लिये नहीं बल्कि जोड़ने के लिये है। गांधी जीवन के आखिरी पड़ाव तक बिना अपनी जान की परवाह किये दंगों को रोकने और साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने का प्रयास करते रहे जो अपने आप में सभी के लिये प्रेरणादायक है।

निष्कर्ष

जहाँ कार्ल मार्क्स अपने साम्यवादी दर्शन के माध्यम से उत्पीड़ित वर्ग के कल्याण के लिए अपनी चिंता व्यक्त की, वहीं गांधी इसे अधिक समग्र तरीके से कहना और करना चाहते थे। उन्होंने भारत में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अस्पृश्यता के विरुद्ध लड़ाई शुरू की और तथाकथित अछूतों के लिए सामाजिक अधिकारों की मांग की। गांधी मानवतावाद के प्रवर्तक हैं। उनके विचार मानववाद को बढ़ाने वाले और मानव के बीच विभिन्न भेदभावों को समाप्त करने वाले हैं। गांधी के विचारों और कार्यों से बहुत लोगों के जीवन में आत्मसम्मान आया, राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई और सामाजिक सद्भाव स्थापित हुआ। इसीलिये रवींद्रनाथ टैगोर ने गांधी को महात्मा कहा। वर्तमान समय की अनेक बुराइयों को गांधी के मानववादी विचारों के आधार पर दिखाए गए रास्ते पर चलकर दूर किया जा सकता है। गांधी ने मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला से लेकर दलाई लामा और बराक ओबामा तक दुनिया के अनेक नेताओं, विचारकों और कार्यकर्ताओं को को प्रभावित और प्रेरित किया है। रोमां रोलां, लुई फिशर और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे पश्चिम के बड़े बुद्धिजीवियों ने गांधीवादी विचारों को अपनाया। गांधी भारत के ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की धरोहर हैं। गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता आने वाले समय में भी बनी रहेगी।

संदर्भ

एंड्रयूज, सी. एफ.(1949), महात्मा गांधीज़ आइडियाज़, जॉर्ज एलन एंड अनविन, लंदन
गाबा, ओ० पी० (2007), राजनीतिक चिंतन की रूप रेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
गांधी, एम० के० (2005). हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
जटाशंकर (2003). नैतिक दर्शन के विविध आयाम, श्री भुवनेश्वरी विद्या प्रतिष्ठान. इलाहाबाद
लाल, बी० के० (1973), समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
प्रभु, आर० के० एवं राव, यू० आर० (1994), महात्मा गाँधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
रोलां, रोमां (2016), महात्मा गाँधी जीवन और दर्शन (अनु०), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1949), महात्मा गांधीरू एसेज़ एण्ड रिफलेक्शन ऑन हिज़ लाइफ एण्ड द वर्क, जार्ज एण्ड अनविन, लंदन
सिन्हा, मनोज (सम्पा०) (2013), गांधी अध्ययन, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली
वर्मा, वी० पी० (2020), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language